Dr. Dhananjay Kumar Singh
Assistent Professor
S. R. A. P college

SPANISH CIVIL WAR

स्पेन के गृहयुद्ध को द्वितीय विश्वयुद्ध का पूर्वाभ्यास भी कहा जाता है। ऐसा इसलिए कि इसमें प्रजातांत्रिक सरकार को बनाए रखने के लिए मित्रराष्ट्र ब्रिटेन फ्रांस तथा सोवियत रूस शामिल था वही स्पेन में अधिनायकवाद को स्थापित करने में मुसोलिनी हिटलर तथा सालाजार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। जर्मनी ने अपने नवगठित वायु सेना लुफ्तवाफ का भी इसमें सफल परीक्षण किया। यही कारण था कि स्पेन के गृहयुद्ध में अंतत: जनरल फ्रांसिस्को फ्रैंको के नेतृत्व में अधिनायकवाद की स्थापना हुई।

गृहयुद्ध के कारण :-

(i) आर्थिक कारण :- प्रथम विश्वयुद्ध में स्पेन शामिल नहीं हुआ था, जिससे वहाँ युद्ध दौरान भी आर्थिक सम्पन्नता थी। परंतु महायुद्ध के समाप्ति के बाद अन्य देशों के भाँति स्पेन में भी आर्थिक संकट आ गया, बेकारी बढ़ने लगी कारखानों में काम कम होने लगा, जिससे पूँजीपतियों ने मजदूरों की मजदूरी कम कर दी। परिणामस्वरूप मजदूरों में असंतोष बढ़ता गया, हड़तालें हुई तथा स्पेन में साम्यवादी विचारधारा का विकास हुआ। ऐसी स्थिति ने

स्पेन में खूनी गृहयुद्ध को जन्म दिया।

(2) मोरक्को का विद्रोह :- मोरक्को के उत्तरी हिस्से पर स्पेन का अधिकार था, यहाँ के नागरिक स्वतंत्रता के लिए कभी-कभी विद्रोह भी करते थे, परंतु 1921 ई० में विद्रोह ने भयंकर रूप धारण कर लिया, जिससे स्पेन में भयंकर असंतोष फैला तथा स्पेन की जनता ने इस विद्रोह को न दबा पाने एवं कुप्रबंधन के लिए स्पेन के राजा अलफांसो-13 को जिम्मेदार माना। इस प्रकार स्पेनवासियों का अधिनायकवाद की तरफ झुकाव हुआ, क्योंकि ये राष्ट्रीय सम्मान एवं आर्थिक संकट, दोनों ही समस्याओं से स्पेन को निकालने का आश्वासन दे रहे थे।

(3) सत्ता का केन्द्रीकरण एवं अयोग्य शासन :- स्पेन के राजा प्रीमो दी रिवेरा के साथ मिलकर विद्रोही भावना को दबा दिया पार्लियामेंट को भी भंग कर दिया गया, शासन विधान को रद्द कर दिया गया तथा सारी शक्ति प्रीमो दी रिवेरा एवं राजा के हाथों में आ गई। प्रीमो दी रिवेरा का प्रयास था कि इटली के भाँति स्पेन में

एक पार्टी व एक नेता का प्रभुत्व कायम किया जाए, उसे इसमें सफलता भी मिली। तथा 1923-30 तक उसने स्वेच्छापूर्ण शासन भी किया। इटली की फासिस्ट व्यवस्था का अनुकरण करते हुए उसने एक राष्ट्रीय दल का गठन किया और पूंजीपतियों एवं मजदूरों के झगड़े मिटाने के लिए सिंडिकेटों का निर्माण किया गया। फ्रांस के साथ मिलकर मोरक्को विद्रोह को भी उसने कुचल दिया।

प्रीमो दी रिवेरा ने नया संविधान व पार्लियामेंट का गठन किया जिसमें राष्ट्रीय दल का प्रभुत्व बनाए रखने का भी प्रबंध किया गया। परंतु स्पेन में न ही, इटली व जर्मन जैसी परिस्थिति थी और न ही प्रीमो दी रिवेरा में वो जादू कि जनता को अपना दिवाना बना सके। दूसरी तरफ साम्यवादी विचारधारा भी स्पेन मे मजबूत हो रही थी। समय-समय पर हड़तालें दंगे व विद्रोह होते रहते थे। राजा भी प्रीमो दी रिवेरा के इस शासन से नाखुश हो गया था। इसी बीच सन 1930 में खराब स्वास्थ्य कारणों से उसने इस्तीफा दे

दिया परंतु उसके अधिकारी आयोग्य थे। अतः वे अपना प्रभाव बनाए रखने में विफल हो गए।

राजनीतिक अस्थिरता :- स्पेन इस समय राजनीतिक अस्थिरता के दौर से गुजर रहा था, इसी बीच वहाँ जमोरा नामक साहसी नेता के नेतृत्व में साम्यवादियों ने विद्रोह को खड़ा खड़ा किया तथा अल्फांसो XIII को राजगद्दी त्यागने के लिए मजबूर किया। जमोरा ने स्पेन में गणतंत्र घोषित कर दिया तथा स्वयं राष्ट्रपति बना तथा अजाना प्रधानमंत्री। नया संविधान तैयार किया गया राज्य को चर्च से पृथक कर दिया गया। चर्च की समस्त संपत्ति छीनकर उसे राज्य के अधीन कर दी गई।

1933 के चुनाव में इन साम्यवादियों को अधिक सफलता नहीं मिली इन्होंने कैथोलिक चर्च के संबंध में बहुत ही कठोर नीति अपनाई थी। अतः कैथोलिक चर्च पादरियों के प्रयास से एक नए दल। कैथोलिक पोपुलर एक्शन पार्टी का गठन किया गया। जिसका नेता गिल रोबल्स था।